हिन्दी साप्ताहिक

MPHIN/36762

धर्म अध्यात्म और संसार

वर्ष : 01 अंक 01 उज्जैन (म.प्र.) प्रति गुरूवार दिनांक, 15 दिसम्बर 2021 पृष्ठ : 8 मूल्य : 5 रूपया

प्रज्ञानं ब्रह्मा

सनातम धर्म के चार स्तम्भ

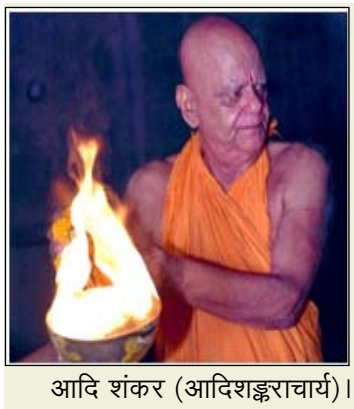

आदि शंकर (आदिशङ्कराचार्य)। सनातन संस्कृति के एक महान दार्शनिक एवं धर्मप्रवर्तक इन्होंने भारतवर्ष में चार कोनों में चार मठों की स्थापना की थी जो अभी तक बहुत प्रसिद्ध और पवित्र माने जाते हैं और जिन पर आसीन संन्यासी शंकराचार्य कहे जाते हैं। वे चार धार्मिक मठों में दक्षिण के श्रृंगेरी शंकराचार्यपीठ, पूर्व (ओडिशा) जगन्नाथपुरी में गोवर्धनपीठ, पश्चिम द्वारिका में शारदामठ तथा बद्रिकाश्रम में ज्योतिर्पीठ भारत की एकात्मकता को आज भी दिग्दर्शित कर रहा है। कुछ लोग श्रृंगेरी को शारदापीठ तथा गुजरात के द्वारिका में मठ को काली मठ कहते है।

भारतीय उपमहाद्वीप के सम्पूर्ण पूर्व भाग को श्री गोवर्धन पीठ का क्षेत्र माना जाताहै। यहाँ के देवता जगन्नाथ (भगवान विष्णु) और देवी विमला (भैरवी) हैं। यहाँ का महावाक्य प्रज्ञानं ब्रह्म है। यहाँ गोवर्धननाथ कृष्ण और अर्धनारेश्वर शिव के श्री विग्रह आदि शंकर द्वारा स्थापित हैं। इसमें बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़,राजमुंदरी तक आंध्र प्रदेश, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, सिक्किम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम और प्रयाग तक उत्तर प्रदेश के भारतीय राज्य शामिल हैं। साथ ही नेपाल, बांग्लादेश और भूटान देश भी इस मठ का आध्यात्मिक क्षेत्र माना जाता है। इस मठ के अंतर्गत पुरी, इलाहाबाद, पटना और वाराणसी आदि पवित्र स्थान आते हैं। वर्तमान शंकराचार्य जी स्वामी निश्चलानंद सरस्वती शंकराचार्य परंपरा के 145 वे शंकराचार्य जी है । आपके बारे में संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है। श्री ऋगवैदिय पूर्वाम्नाय गोवर्धनमठ पुरीपीठ के वर्तमान 145 वें श्रीमज्जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी श्री निश्चलानन्द सरस्वतीजी महाराज भारत के एक ऐसे सन्त हैं जिनसे आधुनिक युग में विश्व के सर्वोच्च वैधानिक संगठनों संयुक्त राष्ट्रसंघ तथा विश्व बैंक तक ने मार्गदर्शन प्राप्त किया है 7 संयुक्त राष्ट्रसंघ ने दिनांक 28 से

31 अगस्त 2000 को न्यूयार्क में आयोजित विश्वशांति शिखर सम्मेलन तथा विश्व बैंक ने वर्ल्ड फेथ्स डेवलपमेन्ट डाइलॉग– 2000 के वाशिंगटन सम्मेलन के अवसर पर उनसे लिखित मार्गदर्शन प्राप्त किया था 7 श्री गोवर्धन मठ से संबंधित स्वस्ति प्रकाशन संस्थान द्वारा इसे क्रमशः विश्व शांति का सनातन सिद्धांत तथा सुखमय जीवन सनातन सिद्धांत शीर्षक से सन् 2000 में पुस्तक रूप में प्रकाशित किया है 7 वैज्ञानिकों ने कम्प्यूटर व मोबाईल फोन से लेकर अंतरिक्ष तक के क्षेत्र में किये गये आधुनिक आविष्कारों में वैदिक गणितीय सिद्धांतों का उपयोग किया है जो पूज्यपाद जगद्गुरू शंकराचार्य श्री स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा रचित स्वस्तिक गणित नामक पुस्तक में दिये गये हैं । गणित के ही क्षेत्र में पूज्यपाद जगद्गुरू शंकराचार्य जी महाराज की अंक पदीयम् तथा गणित दर्शन नाम से दो और पुस्तकों का लोकार्पण हुआ है, जो निश्चित ही विश्व मंच पर वैज्ञानिकों के लिए विभिन्न क्षेत्रों में नए आविष्कारों के लिए नए परिष्कृत मानदंडों की स्थापना करेंगे।

अपनी भूमिका से भारत वर्ष को पुनः विश्वगुरू के रूप में उभारने वाले पूज्यपाद जगद्गुरू श्री शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वतीजी महाराज का जन्म 72 वर्ष पूर्व बिहार प्रान्त के मिथिलाच्जल में दरभंगा (वर्तमान में मधुबनी) जिले के हरिपुर बख्शीटोलमानक गांव में आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी, बुधवार रोहिणी नक्षत्र, विक्रम संवत् 2000 तदानुसार दिनांक 30 जून ई 7

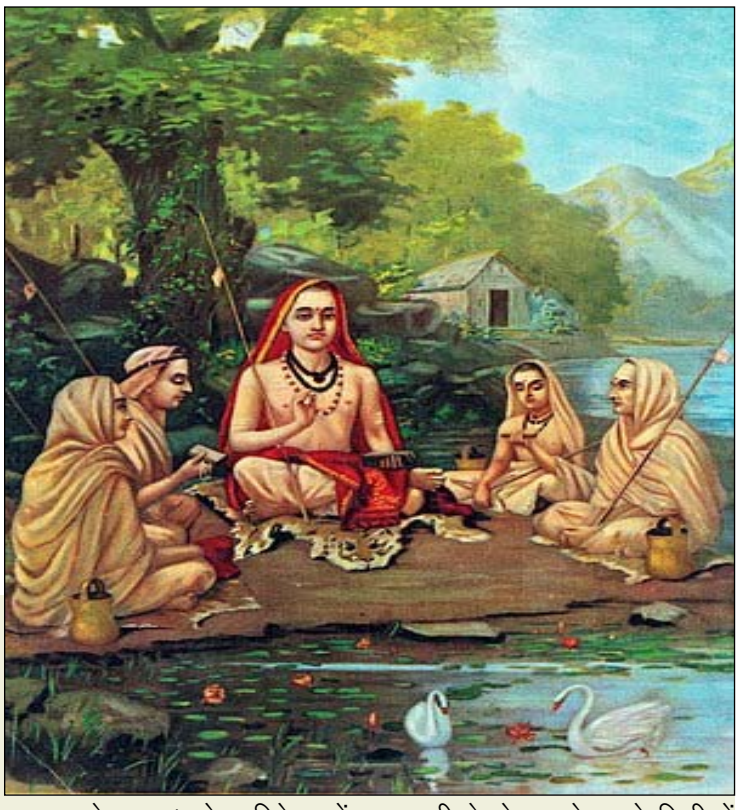

1943 को हुआ। देश–विदेश में उनके अनुयायी उनका प्राकट्य दिवस उमंग व उत्साहपूर्वक मनाते हैं 7 पूज्य पिताजी पं। श्री लालवंशी झा क्षेत्रीय कुलभूषण दरभंगा नरेश के राज पंडित थे 7 आपकी माताजी का नाम गीता देवी था 7 आपके बचपन का नाम नीलाम्बर था। आपकी प्रारंभिक शिक्षा बिहार और दिल्ली में सम्पन्न हुई है। दसवीं तक आप बिहार में विज्ञान के विद्यार्थी रहे 7 दो वर्षों तक तिब्बिया कॉलेज दिल्ली में अपने अग्रज डॉ 7 श्री शुक्रदेव झा जी की छत्रछाया में शिक्षा ग्रहण की पढ़ाई के साथ–साथ कुश्ती, कबड्डी और तैरने में अभिरूचि के अलावा आप फुटबाल के भी अच्छे खिलाड़ी थे 7 बिहार और दिल्ली में आप छात्रसंघ विद्यार्थी परिषद के उपाध्यक्ष और महामंत्री भी रहे 7 अपने अग्रज पं 7 श्रीदेव झा जी के प्रेरणा से अपने दिल्ली में सर्व वेद शाखा सम्मेलन के अवसर पर पूज्यपाद धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज एवं श्री ज्योतिर्मठ बदरिकाश्रम के पीठाधीश्वर पूज्यपाद जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी श्री कृष्णबोधाश्रम जी महाराज का दर्शन प्राप्त किया 7 इस अवसर पर उन्होंने पूज्य करपात्री जी महाराज को हृदय से अपना गुरूदेव मान लिया 7 तिब्बिया कालेज में जब आपकी सन्यास की भावना अत्यंत तीव्र होने लगी तब वे बिना किसी को बताये काशी के लिए पैदल ही चल पड़े 7 इसके उपरांत आपने काशी, वृन्दावन, नैमिषारण्य, बदरिकाआश्रम, ऋषिकेश, हरिद्वार, पुरी, श्रृंगेरी आदि प्रमुख धर्म स्थानों में रहकर वेद–वेदांग आदि का गहन अध्ययन किया 7 नैमिषाराण्य के पूज्य स्वामी श्री नारदानन्द सरस्वती जी ने आपका नाम 'ध्रुवचैतन्य' रखा 7 आपने 7 नवम्बर 1966 को दिल्ली में देश के अनेक वरिष्ठ संत–महात्माओं एवं गौभक्तों के साथ गौरक्षा आन्दोलन में भाग लिया। इस पर उन्हें 9 नवम्बर को बन्दी बनाकर 52 दिनों तक तिहाड़ जेल में रखा गया। बैशाख कृष्ण एकादशी गुरूवार विक्रम संवत् 2031 तद्नुसार दिनांक 18 अप्रैल 1974 को हरिद्वार में आपका लगभग 31 वर्ष की आयु में पूज्यपाद धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज के करकमलों से सन्यास सम्पन्न हुआ और उन्होंने आपका नाम 'निश्चलानन्द सरस्वती' रखा 7 श्री गोवर्धन मठ पुरी के तत्कालीन 144 वें शंकराचार्य पूज्यपाद जगद्गुरू स्वामी

हमारे ऋषियों ने वेदों को कैसे सुरक्षित रखा ?

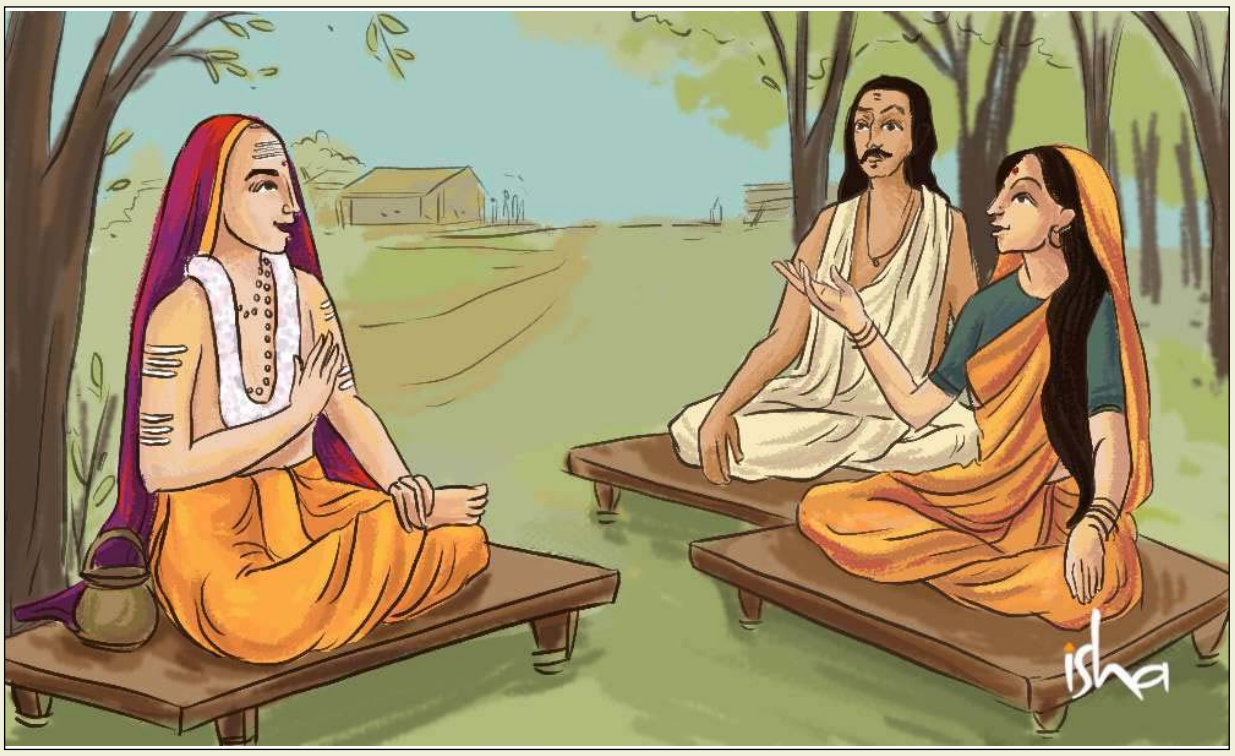

संकलन कर्ता : श्रीमती नीति विक्रम टंडन,M.Sc.(Physics), Ph.D. (Pursuing)-Plasama Physics.

जाने वेदों में रत्ती भर भी मिलावट क्यों नही हो सकी ? जब कोई सनातनी ये बताने की कोशिश करता हैं की हमारे ज्यादातर ग्रंथों में मिलावट की गई है तो वो वेदों पर भी ऊँगली उठाते हैं की अगर सभी में मिलावट की गई है तो वेदों में भी किसी ने मिलावट की होगी....परन्तु ऐसा नही हैं क्यों नही हैं जानते हैं..वेदों को सुरक्षित रखने के लिए उनकी अनुपुर्वी, एक–एक शब्द और एक एक अक्षर को अपने मूल रूप में बनाये रखने के लिए जो उपाय किये गए उन्हें आज कल की गणित की भाषा में **'Permutation and combination'** (क्रमपरिवर्तन और संयोजन)

कहा जा सकता हैं.. वेद मन्त्र को स्मरण रखने और उनमे एक मात्रा का भी लोप या विपर्यास ना होने पाए इसके लिए उसे 13 प्रकार से याद किया जाता था.... याद करने के इस उपाय को दो भागों में बांटा जा सकता हैं.... प्रकृति–पाठ और विकृति–पाठ.... प्रकृति पाठ का अर्थ हैं मन्त्र को जैसा वह है वैसा ही याद करना.... विकृति– पाठ का अर्थ हैं उसे तोड़ तोड़ कर पदों को आगे पीछे दोहरा–दोहरा कर भिन्न–भिन्न प्रकार से याद करना.... याद करने के इन उपायों के 13 प्रकार निश्चित किये गए थे––– संहिता–पाठ, पद–पाठ, कर्म–पाठ, जटा–पाठ, पुष्पमाला–पाठ, कर्ममाला–पाठ, शिखा–पाठ, रेखा–पाठ, दण्ड–पाठ, रथ–पाठ, ध्वज–पाठ, धन–पाठ और त्रिपद धन–पाठ.... पाठों के इन नियमों को विकृति वल्ली नमक ग्रन्थ में विस्तार से दिया गया हैं.... परिमाणतः श्रोतिय ब्राह्मणों (जिन्हें मैक्समूलर ने जीवित पुस्तकालय नाम से अभिहित किया हैं) के मुख से वेद आज भी उसी रूप में सुरक्षित हैं जिस रूप में कभी आदि ऋषिओं ने उनका उच्चारण किया होगा... विश्व के इस अदभुत आश्चर्य को देख कर एक पाश्चात्य विद्वान् ने आत्मविभोर होकर कहा था की यदि वेद की सभी मुद्रित प्रतियाँ नष्ट हो जाएँ तो भी इन ब्राह्मणों के मुख से वेद को पुनः प्राप्त किया जा सकता हैं.... मैक्समूलर ने **'India-What can it teach us'** (प्रष्ठ 195) में लिखा हैं ––––– आज भी यदि वेद की रचना को कम से कम पाच हजार वर्ष (मैक्समूलर के अनुसार) हो गए हैं... भारत में ऐसे श्रोतिय मिल सकते हैं जिन्हें समूचा वैदिक साहित्य कंठस्थ हैं .... स्वयं अपने ही निवास पर मुझे ऐसे छात्रों से मिलने का सोभाग्य मिला हैं जो न केवल समूचे वेद को मौखिक पाठ कर सकते हैं वरन उनका पाठ सन्निहित सभी आरोहावरोह से पूर्ण होता हैं.... उन लोगो ने जब भी मेरे द्वारा सम्पादित संस्करणों को देखा और जहाँ कही भी उन्हें अशुद्धि मिली उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के उन अशुद्धियों की और मेरा ध्यान आकर्षित किया....

मुझे आश्चर्य होता है उनके इस आत्मविश्वास पर जिसके बल पर वे सहज ही उन असुधियों को ध्यान में ला देते थे जो हमारे संस्करणों में जहाँ–तहाँ रह जाती थी.... वेदों की रक्षा के लिए किये गए इन प्रयत्नों की सराहना करते हुए मैक्समूलर ने अपने ग्रन्थ **'Origin of Religion'** (धर्म की स्थापना) के प्रष्ठ 131 पर लिखा हैं।

'वेदों का पाठ हमें इस तरह की सटीकता के साथ सौंप दिया गया है कि काम की उचित समझ में शायद ही कभी पढ़ा जा रहा है या पूरे ऋग्वेद में अनिश्चित पहलू भी है।'

Regeda Vol. I भाग **XXV** में मैक्समूलर ने पुनः लिखा (जहां तक हम निर्णय लेने में सक्षम हैं, हम शब्द की सामान्य अर्थ में वैदिक भजनों में विभिन्न रीडिंगों की शायद ही कभी बात कर सकते हैं। संग्रह पांडुलिपियों से इकट्ठा होने के लिए विभिन्न रीडिंग, अब हमारे लिए सुलभ हैं। ')

वेदों को शुद्धरूप में सुरक्षा का इतना प्रबंध आरम्भ से ही कर लिया गया था की उनमे प्रक्षेप करना संभव नही था....

इन उपायों के उद्देश्य के सम्बंध में सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डॉ.भंडारकर ने अपने **'India Antiquary'** के सन् 1874 के अंक में लिखा था।

"The object of there different arrangements is simply he most accurate preservation of the sacred te&t of the Vedas.

('उनकी विभिन्न व्यवस्थाओं का उद्देश्य वेदों के पवित्र पाठ का सबसे सटीक संरक्षण है।)

वेदों के पाठ को ज्यों का त्यों सुरक्षित रखने के लिए जो दूसरा उपाय किया गया था वह यह था की वेदों की छंद– संख्या, पद–संख्या, तथा मंत्रानुक्र्म से छंद, ऋषि, देवता को बताने के लिए उनके अनुक्रमणियां तैयार की गई जो अब भी शौनकानुक्रमणी, अनुवाकानुक्रमणी, सुक्तानुक्रमणी, आर्षानुक्रमणी, छंदोंनुक्रमणी, देवतानुक्रमणी, कात्यायनीयानुक्रमणी, सर्वानुक्रमणी, ऋग्विधान, ब्रहद्देवता, मंत्रार्षाध्याय, कात्यायनीय, सर्वानुक्रमणी, प्रातिशाख्यसूत्रादि, के नामों से पाई जाती हैं,साथ ही समस्त शिक्षा ग्रन्थ

....इन अनुक्रमणीयों पर विचार करते हुए मैक्समूलर ने **`Ancient Sanskrit Literature'** के प्रष्ठ 117 पर लिखा है की ऋग्वेद की अनुक्रमणी से हम उनके सूक्तों और पदों की पड़ताल करके निर्भीकता से कह सकते हैं की अब भी ऋग्वेद के मन्त्रों शब्दों और पदों की वही संख्या हैं जो कभी कात्यायन के समय में थी।

इस विषय में प्रो. मैकडानल ने भी स्पष्ट लिखा हैं की आर्यों ने अति प्राचीन कल से वैदिक पाठ की शुद्धता रखने और उसे परिवर्तन अथवा नाश से बचाने के लिए असाधारण सावधानता का उपयोग किया हैं.... इसका परिणाम यह हुआ की इसे ऐसी शुद्धता के साथ रखा गया है जो साहित्य के इतिहास में भी अनुपम हैं।

वैकुंठ धाम कहां और कैसा है, जानिए रहस्य!

संकलन कर्ता :
श्रीमती मनोरमा
रामकृष्ण जोशी

वैकुण्ठ का शाब्दिक अर्थ है- जहां कुंठा न हो। कुंठा यानी निष्क्रियता, अकर्मण्यता, निराशा, हताशा, आलस्य और दरिद्रता। इसका मतलब यह हुआ कि वैकुण्ठ धाम ऐसा स्थान है जहां कर्महीनता नहीं है, निष्क्रियता नहीं है। कहते हैं कि मरने के बाद पुण्य कर्म करने वाले लोग स्वर्ग या वैकुंठ जाते हैं। हालांकि वेद यह नहीं कहते हैं कि मरने वे बाद लोग स्वर्ग या वैकुंठ जाते हैं। वेदों में मरने के बाद की गतियों के बारे में उल्लेख मिलता है और मोक्ष क्या होता है इस पर ही ज्यादा चर्चा है। खैर, हम आपको पुराणों की धारणा अनुसार बताना चाहेंगे कि वैकुंठ धाम कहां है और वह कैसा है।

वैकुंठ धाम कहां है?

हिन्दू धर्म के अनुसार कैलाश पर महादेव, ब्रह्मलोक में ब्रह्मदेव बसते हैं। उसी तरह भगवान विष्णु का निवास वैकुंठ में बताया गया है। वैकुंठ लोक की स्थिति तीन जगह बताई गई है। धरती पर, समुद्र में और स्वर्ग के ऊपर। वैकुंठ को विष्णुलोक और वैकुंठ सागर भी कहते हैं। भगवान श्रीकृष्ण के बाद इसे गोलोक भी कहने लगे। चूंकि श्रीकृष्ण और विष्णु एक ही हैं इसीलिए श्रीकृष्ण के निवास स्थान को भी वैकुंठ कहा जाता है।

पहला वैकुंठ धाम : - धरती पर बद्रीनाथ, जगन्नाथ और द्वारिकापुरी को भी वैकुंठ धाम कहा जाता है। चारों धामों में सर्वश्रेष्ठ हिन्दुओं का सबसे पावन तीर्थ बद्रीनाथ, नर और नारायण पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा, अलकनंदा नदी के बाएं तट पर नीलकंठ पर्वत श्रृंखला की पृष्ठभूमि पर स्थित है। भारत के उत्तर में स्थित यह मंदिर भगवान विष्णु का दरबार माना जाता है। बद्रीनाथ धाम में सनातन धर्म के सर्वश्रेष्ठ आराध्य देव श्री बद्रीनारायण भगवान के 5 स्वरूपों की पूजा-अर्चना होती है। विष्णु के इन 5 रूपों को %पंच बद्री% के नाम से जाना जाता है। श्री विशाल बद्री, श्री योगध्यान बद्री, श्री भविष्य बद्री, श्री वृद्ध बद्री और श्री आदि बद्री।

बद्रीनाथ के अलावा द्वारिका और जगन्नाथपुरी को भी वैकुंठ धाम कहा जाता है। कहते हैं कि सतयुग में बद्रीनाथ धाम की स्थापना नारायण ने की थी। त्रेतायुग में रामेश्वरम्? की स्थापना स्वयं भगवान श्रीराम ने की थी। द्वापर युग में द्वारिकाधाम की स्थापना योगीश्वर श्रीकृष्ण ने की और कलयुग में जगन्नाथ धाम को ही वैकुंठ कहा जाता है। पुराणों में धरती के बैकुंठ के नाम से अंकित जगन्नाथ पुरी का मंदिर समस्त दुनिया में प्रसिद्ध है। ब्रह्म और स्कंद पुराण के अनुसार पुरी में भगवान विष्णु ने पुरुषोत्तम नीलमाधव के रूप में अवतार लिया था।

दूसरा वैकुंठ धाम : - दूसरे वैकुंठ की स्थिति धरती के बाहर बताई गई है। इसे ब्रह्मांड से बाहर और तीनों लोकों से ऊपर बताया गया है। यह धाम दिखाई देने वाली प्रकृति से 3 गुना बड़ा है। इसकी देखरेख के लिए भगवान के 96 करोड़ पार्षद तैनात हैं। हमारी प्रकृति से मुक्त होने वाली हर जीवात्मा इसी परमधाम में शंख, चक्र, गदा और पद्म के साथ प्रविष्ट होती है। वहां से वह जीवात्मा फिर कभी भी वापस नहीं होती। यहां श्रीविष्णु अपनी 4 पटरानियों श्रीदेवी, भूदेवी, नीला और महालक्ष्मी के साथ निवास करते हैं।

इसी वैकुंठ के बारे में कहा जाता है कि मरने के बाद विष्णु भक्त पुण्यात्मा यहां पहुंच जाती है। पुराणों के अनुसार इस वैकुंठ की स्थिति हमारे ब्रह्मांड के परे है। जीवात्मा जब उस वैकुंठ की यात्रा करती है, तो उसको विदा देने के लिए मार्ग में समय के देवता, प्रहर के देवता, दिवस के देवता, रात्रि के देवता, दिन के देवता, ग्रहों के देवता, नक्षत्रों के देवता, माह के देवता, मौसम के देवता, पक्ष के देवता, उत्तरायण के देवता, दक्षिणायन के देवता सभी तलों (अतल, सुतर, पाताल आदि) के देवता, सभी 33 कोटि के देवता पहले उसे पुनः किसी योनि में धकेलने का प्रयास करते हैं या वैकुंठ जाने देने से रोकते हैं। लेकिन जो जीवात्मा प्रभु श्रीविष्णु की शरणागति होता है उसको ये सभी एकपाद विभूति के अंतिम सीमा तक जाते हैं और त्रिपाद विभूति के बाहर प्रवाहित होने वाली विरजा नदी के तट पर छोड़ देते हैं।

इसी एकपाद विभूति में हमारा संपूर्ण ब्रह्मांड और सारे लोक अवस्थित हैं। इस एकपाद विभूति की सीमा के बाद शुरू होता है वैकुंठ धाम। पौराणिक मान्यता है कि इसी वैकुंठ धाम और एकपाद विभूति के मध्य विरजा नामक एक नदी बहती है। इस नदी से ही त्रिपाद विभूति शुरू होती है, जो वैकुंठ लोक है। मुक्त होने वाली जीवात्मा को जब सभी देवता विरजा नदी तक छोड़कर जाते हैं तब वह जीवात्मा नदी में डुबकी लगाकर उस पार चली जाती है। उस पार से पार्षदगण उसको सीधे श्रीहरि विष्णु के पास ले जाते हैं। वहां वह उनके दर्शन करके परम आनंद को प्राप्त करता है। इस प्रकार त्रिपाद विभूति में ही वह जीवात्मा सदा के लिए स्थापित हो जाती है। पुराणों में इस वैकुंठ धाम का बड़ा ही रोचक चित्रण किया गया है।

हे अर्जुन! अव्यक्त अक्षर इस नाम से कहा गया है, उसी अक्षर नामक अव्यक्त भाव को परमगति कहते हैं तथा जिस सनातन अव्यक्त भाव को प्राप्त होकर मनुष्य वापस नहीं आते, वह मेरा परम धाम है।।- गीता अध्याय 8, श्लोक 21।।

तीसरा वैकुंठ धाम : - भगवान श्रीकृष्ण ने द्वारिका के बाद एक ओर नगर बसाया था जिसे वैकुंठ कहा जाता था। कुछ इतिहासकारों के मुताबिक अरावली की पहाड़ी श्रृंखला पर कहीं वैकुंठ धाम बसाया गया था, जहां इंसान नहीं, सिर्फ साधक ही रहते थे। भारत की भौगोलिक संरचना में अरावली प्राचीनतम पर्वत है। भू-शास्त्र के अनुसार भारत का सबसे प्राचीन पर्वत अरावली का पर्वत है। माना जाता है कि यहीं पर श्रीकृष्ण ने वैकुंठ नगरी बसाई थी। राजस्थान में यह पहाड़ नैऋत्य दिशा से चलता हुआ ईशान दिशा में करीब दिल्ली तक पहुंचा है।

अरावली या अर्वली उत्तर भारतीय पर्वतमाला है। राजस्थान राज्य के पूर्वोत्तर क्षेत्र से गुजरती 560 किलोमीटर लंबी इस पर्वतमाला की कुछ चट्टानी पहाड़ियां दिल्ली के दक्षिण हिस्से तक चली गई हैं। अगर गुजरात के किनारे अर्बुद या माउंट आबू का पहाड़ उसका एक सिरा है तो दिल्ली के पास की छोटी-छोटी पहाड़ियां धीरज दूसरा सिरा।

*वैकुंठ और परमधाम में अंतर!!!!

परमधामः- कहते हैं कि परमधाम में जाने के बाद जीवात्मा सदा के लिए जीवन और मरण के चक्र से मुक्त हो जाती है। यह धाम सबसे ऊपर अर्थात सर्वोच्च है। यहां निरंतर अक्षय सुख की अनुभूति होती रहती है। यह धाम स्वयं प्रकाशित है। यहां न सुख है और न दुख, यहां बस परम आंद ही है।

वैकुंठ धामः- मान्यता है कि इस धाम में जीवात्मा कुछ काल के लिए आनंद और सुख को प्राप्त करती है, लेकिन सुख भोगने के बाद उसे पुनः मृत्युलोक में आना होता है। इस स्थान को स्वर्ग से ऊपर बताया गया है। वैकुंठ के ऊपर कैलाश पर्वत है। वैकुंठ को सूर्य और चन्द्र प्रकाशित करते हैंं। यहां गौर करें तो यह विष्णु का बद्रीनाथ धाम हो सकता है। हिन्दू धर्म के अनुसार भगवान श्रीविष्णु के धाम को वैकुंठ धाम कहा जाता है। आपने चार धामों के नाम तो सुने ही होंगे- बद्रीनाथ, द्वारिका, जगन्नाथ और रामेश्वरम्। इसमें से बद्रीनाथ धाम भगवान विष्णु का धाम है। मान्यता के अनुसार इसे भी वैकुंठ कहा जाता है। यह जगतपालक भगवान विष्णु का वास होकर पुण्य, सुख और शांति का लोक है।

हे अर्जुन! जिस परम पद को प्राप्त होकर मनुष्य लौटकर संसार में नहीं आते, उस स्वयं प्रकाश परम पद को न सूर्य प्रकाशित कर सकता है, न चन्द्रमा और न अग्नि ही, वही मेरा परम धाम है।।- गीता अध्याय 15, श्लोक 6।।

हे अर्जुन! ब्रह्मलोक सहित सभी लोक पुनरावर्ती हैं, परंतु हे कुंतीपुत्र! मुझको प्राप्त होकर पुनर्जन्म नहीं होता, क्योंकि मैं कालातीत हूं और ये सब ब्रह्मादि के लोक काल द्वारा सीमित होने से अनित्य हैं।

सनातन धर्म के यह विश्व प्रसिद्ध बारह संवाद, !!!

सनातन धर्म में दो लोगों के बीच होने वाले ऐसे कौन से विश्वम प्रसिद्ध संवाद है जिन्हें पढ़कर या सुनकर लाखों लोगों का जीवन बदल गया है और जिन्हें पढ़कर दुनियभार के राजनीतिज्ञ, नीतिज्ञ, वैज्ञानिक, आध्यामिक और दार्शनिकों ने अपना एक अलग ही धर्म, दर्शन, नीति और विज्ञान का सिद्धांत गढ़ा। यह तय है कि इन्हें पढ़कर आपकी जिंदगी में शांति, दृढ़ता, निर्भिकता और बुद्धि का विकास होगा। हम यहां आपके लिए ऐसी जानकारी लाएं हैं जिन्हें जानकार आप निश्चीत ही हैरान रह जाएंगे।

संकलन कर्ता :सुश्री अक्षिता शर्मा, B.Sc. (Pursuing)-Forensic Science

पहला संवाद,अष्टावक्र और जनक संवाद !!!!!!!!!!

अष्टावक्र दुनिया के प्रथम ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने सत्य को जैसा जाना वैसा कह दिया। न वे कवि थे और न ही दार्शनिक। चाहे वे ब्राह्मणों के शास्त्र हों या श्रमणों के, उन्हें दुनिया के किसी भी शास्त्र में कोई रुचि नहीं थी। उनका मानना था कि सत्य शास्त्रों में नहीं लिखा है। शास्त्रों में तो सिद्धांत और नियम हैं, सत्य नहीं, ज्ञान नहीं। ज्ञान तो तुम्हारे भीतर है।

अष्टावक्र ने जो कहा वह अष्टावक्र गीता% नाम से प्रसिद्ध है। राजा जनक ने अष्टावक्र को अपना गुरु माना था। राजा जनक और अष्टावक्र के बीच जो संवाद हुआ उसे अष्टावक्र गीता के नाम से जाना जाता है।

दूसरा संवाद,श्रीकृष्ण-अर्जुन संवाद!!!!!!!!!!

सनातन धर्म के एकमात्र धर्मग्रंथ है वेद। वेदों के चार भाग हैं– ऋग, यजु, साम और अथर्व। वेदों के सार को उपनिषद कहते हैं और उपनिषदों का सार या निचोड़ गीता में हैं। उपनिषदों की संख्या 1000 से अधिक है उसमें भी 108 प्रमुख हैं। गीता के ज्ञान को भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कुरुक्षेत्र में खड़े होकर दिया था। यह श्रीकृष्णम–अर्जुन संवाद नाम से विख्याीत है।

किसी के पास इतना समय नहीं है कि वह वेद या उपनिषद पढ़ें उनके लिए गीता ही सबसे उत्तम धर्मग्रंथ है। महाभारत के 18 अध्याय में से एक भीष्म पर्व का हिस्सा है गीता। गीता को अच्छेर से समझने से ही आपकी समझ में बदलाव आ जाएगा। धर्म, कर्म, योग, सृष्टि, युद्ध, जीवन, संसार आदि की जानकारी हो जाएगी। सही और गलत की पहचान होने लगेगी। तब आपके दिमाग में स्पष्टता होगी द्वंद्व नहीं। जिसने गीता नहीं पढ़ी वह हिन्दू धर्म के बारे में हमेशा गफलत में ही रहेगा।

श्रीकृष्ण के गुरु घोर अंगिरस थे। घोर अंगिरस ने देवकी पुत्र कृष्ण को जो उपदेश दिया था वही उपदेश कृष्ण गीता में अर्जुन को देते हैं। छांदोग्य उपनिषद में उल्लेख मिलता है कि देवकी पुत्र कृष्णा घोर अंगिरस के शिष्य हैं और वे गुरु से ऐसा ज्ञान अर्जित करते हैं जिससे फिर कुछ भी ज्ञातव्य नहीं रह जाता है।

तीसरा संवाद,यक्ष-युद्धिष्ठिर संवाद !!!!!!!!

यक्ष और युद्धिष्ठिर के बीच हुए संवाद को यक्ष प्रश्न कहा जाता है। यक्ष और युधिष्ठिर के बीच जो संवाद हुआ है उसे जानने के बाद आप जरूर हैरान रह जाएंगे। यह अध्यात्म, दर्शन और धर्म से जुड़े प्रश्न ही नहीं है, यह आपकी जिंदगी से जुड़े प्रश्न भी है। आप भी अपने जीवन में कुछ प्रश्नों के उत्तर ढूंढ ही रहे होंगे।

भारतीय इतिहास ग्रंथ महाभारत में 'यक्ष–युधिष्ठिर संवाद' नाम से एक बहु चर्चित प्रकरण है। संवाद का विस्तृत वर्णन वनपर्वके अध्याय 312 एवं 313 में दिया गया है। यक्ष ने युद्धिष्ठिर से लगभग 124 सवाल किए थे। यक्ष ने सवालों की झड़ी लगाकर युधिष्ठिर की परीक्षा ली। अनेकों प्रकार के प्रश्न उनके सामने रखे और उत्तरों से संतुष्ट हुए। अंत में यक्ष ने चार प्रश्न युधिष्ठिर के समक्ष रखे जिनका उत्तर देने के बाद ही उन्होंने मृत पांडवों (अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव) को जिंदा कर दिया था। यह सवाल जीवन, संसार, सृष्टि, ईश्वअर, प्रकृति, नीति, ज्ञान, धर्म, स्त्री, बुराई आदि अनेकों विषयों के संबंधित थे।

चौथा संवाद,लक्ष्मण और रावण संवाद !!!!!!

प्रभु श्रीराम के तीर से जब रावण मरणासन्न अवस्था में हो गया, तब श्रीराम ने लक्ष्मण से उसके पास जाकर शिक्षा लेने को कहा। श्रीराम की यह बात सुनकर लक्ष्मण चकित रह गए।

भगवान श्रीराम ने लक्ष्म ण से कहा कि इस संसार में नीति, राजनीति और शक्ति का महान पंडित रावण अब विदा हो रहा है, तुम उसके पास जाओ और

उससे जीवन की कुछ ऐसी शिक्षा ले लो जो और कोई नहीं दे सकता। श्रीराम की बात मानकर लक्ष्मण मरणासन्न अवस्था में पड़े रावण के नजदीक सिर के पास जाकर खड़े हो गए, लेकिन रावण ने कुछ नहीं कहा। लक्ष्मण ने लौटकर प्रभु श्रीराम से कहा कि वे तो कुछ बोलते ही नहीं। तब श्रीराम ने कहा यदि किसी से ज्ञान प्राप्त करना है तो उसके चरणों के पास हाथ जोड़कर खड़े होना चाहिए, न कि सिर के पास। श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा, जाओ और रावण के चरणों के पास बैठो। यह बात सुनकर लक्ष्मण इस बार रावण के चरणों में जाकर बैठ गए। रावण ने लक्ष्मण को जो सीख दी उसे सभी जानते हैं।

पांचवां संवाद, अंगद और रावण के बीच संवाद!!!!!

गोस्वामी तुलसीदास कृत महाकाव्य श्रीरामचरितमानस के लंकाकांड में बालि पुत्र अंगद रावण की सभा में रावण को सीख देते हुए बताते हैं कि कौन–से ऐसे 14 दुर्गुण है जिसके होने से मनुष्य मृतक के समान माना जाता है।

अंगद–रावण के बीच जो संवाद हुआ था वह बहुत ही रोचक था उसे पढ़ने और उसकी व्याख्या जानेने से व्यक्ति को अपने जीवन की स्थिति के बारे में बहुत कुछ ज्ञान हो जाता है।

छठा संवाद, यमराज-नचिकेता संवाद !!!!!!!!!!

वाजश्रवसपुत्र नचिकेता और मृत्यु के देवता यमराज के बीच जो संवाद होता है वह विश्वय का प्रथम दार्शनिक संवाद माना जा सकता है। वाजश्रवस अपने पुत्र को क्रोधवा यमराज को दान कर देते हैं। नचिकेता तब यमलोक पहुंच जाते हैं।

यमलोक में उसे वक्त यमदूत नचिकेता से कहते हैं कि यमराज इस वक्त नहीं है। तब नचिकेता तीन दिन तक यमराज की प्रतिक्षा करते हैं। यमपुरी के द्वार पर बैठा नचिकेता बीती बातें सोच रहा था। उसे इस बात का संतोष था कि वह पिता की आज्ञा का पालन कर रहा था। लगातार तीन दिन तक वह यमपुरी के बाहर बैठा यमराज की प्रतीक्षा करता रहा। तीसरे दिन जब यमराज आए तो वे नचिकेता को देखकर चौंके।

जब उन्हें उसके बारे में मालूम हुआ तो वे भी आश्चर्यचकित रह गए। अंत में उन्होंने नचिकेता को अपने कक्ष में बुला भेजा। यमराज के कक्ष में पहुंचते ही नचिकेता ने उन्हें प्रणाम किया। उस समय उसके चेहरे पर अपूर्व तेज था। उसे देखकर यमराज बोले– वत्स, मैं तुम्हारी पितृभक्ति और दृढ़ निश्चय से बहुत प्रसन्न हुआ। तुम मुझसे कोई भी तीन वरदान मांग सकते हो।

सातवां संवाद, शिव-पार्वती संवाद !!!!!!!!!

रामायण या रामचरित के बालकांड में शिव–पार्वती संवाद का वर्णन मिलता है। %गायत्री–मंजरी% में भी %शिव–पार्वती संवाद% आता है। हम इस संवाद की बात नहीं कर रहे हैं। भारत के कश्मीर राज्य में अमरनाथ नामक गुफा है जहां जून माह में बाबा अमरनाथ के दर्शन करने के लिए हजारों हिन्दू जाते हैं। दरअसल, यह गुफा शिव और पार्वती संवाद की साक्षी है। यहां भगवान शिव ने माता पार्वती को %रहस्यमयी ज्ञान% की शिक्षा दी थी। इस ज्ञान को विज्ञान भैरव तंत्र में संग्रहित किया गया है।

शिव ने अपनी अर्धांगिनी पार्वती को मोक्ष हेतु अमरनाथ की गुफा में जो ज्ञान दिया, उस ज्ञान की आज अनेकानेक शाखाएं हो चली हैं। वह ज्ञानयोग और तंत्र के मूल सूत्रों में शामिल है। 'विज्ञान भैरव तंत्र' एक ऐसा ग्रंथ है जिसमें भगवान शिव द्वारा पार्वती को बताए गए 112 ध्यान सूत्रों का संकलन है।

अमरनाथ के अमृत वचन :शिव द्वारा मां पार्वती को जो ज्ञान दिया गया, वह बहुत ही गूढ़–गंभीर तथा रहस्य से भरा ज्ञान था। उस ज्ञान की आज अनेकानेक शाखाएं हो चली हैं। वह ज्ञानयोग और तंत्र के मूल सूत्रों में शामिल है। 'विज्ञान भैरव तंत्र' एक ऐसा ग्रंथ है जिसमें भगवान शिव द्वारा पार्वती को बताए गए 112 ध्यान सूत्रों का संकलन है।

योगशास्त्र के प्रवर्तक भगवान शिव के 'विज्ञान भैरव तंत्र' और 'शिव संहिता' में उनकी संपूर्ण शिक्षा और दीक्षा समाई हुई है। तंत्र के अनेक ग्रंथों में उनकी शिक्षा का विस्तार हुआ है। भगवान शिव के योग को तंत्र या वामयोग कहते हैं। इसी की एक शाखा हठयोग की है। भगवान शिव कहते हैं– 'वामो मार्गः परमगहनो योगितामप्यगम्यः' अर्थात वाम मार्ग अत्यंत गहन है और योगियों के लिए भी अगम्य है। –मेरुतंत्र

आठवां संवाद,याज्ञवल्क्यजी-गार्गी संवाद!!!!

वृहदारण्यक उपनिषद् में दोनों के बीच हुए संवाद का उल्लेख मिलता है। राजा जनक अपने राज्य में शास्त्रार्थ का आयोजन करते रहते थे। जो भी शास्त्रार्थ में जीत जाता था वह सोने से लदी गाएं ले जाता था। एक बार के आयोजन में याज्ञवल्क्यजी को भी निमंत्रण मिला था। तब याज्ञवल्क्यजी ने शास्त्रार्थ से पहले ही अपने एक शिष्य से कहा– बेटा! इन गौओं को अपने यहां हांक ले चलो।

ऐसे में सभी ऋषि क्रुद्ध होकर उनसे शास्त्रार्थ करने लगे। याज्ञवल्क्यजी ने सबके प्रश्नों का यथाविधि उत्तर दिया और सभी को संतुष्ट कर दिया। उस सभा में ब्रह्मवादिनी गार्गी भी बुलायी गयी थी। सबके पश्चात् याज्ञवल्क्यजी से शास्त्रार्थ करने वे उठी। दोनों के बीच जो शास्त्रार्थ हुआ। गार्गी ने याज्ञवल्क्यजी से कई प्रश्न किए। अंत में याज्ञवल्क्य ने कहा– गार्गी! अब इससे आगे मत पूछो। इसके बाद महर्षि याज्ञवक्ल्यजी ने यथार्थ सुख वेदान्ततत्??व समझाया, जिसे सुनकर गार्गी परम सन्तुष्ट हुई और सब ऋषियों से बोली– भगवन्! याज्ञवल्क्य यथार्थ में सच्चे ब्रह्मज्ञानी हैं। गौएं ले जाने का जो उन्होंने साहस किया वह उचित ही था।

नौवां संवाद, काक भुशुण्डी-गरुड़जी संवाद !!!!!!!!

काक भुशुण्डीव ने पक्षीराज गरुड़जी को राम की कथा पहले ही सुना दी थी। इसका वर्णन हमें रामायण और रामचरित मानस में मिलता है। शिवजी माता पार्वती से कहते हैं कि इससे पहले यह सुंदर कथा काक भुशुण्डी ने गरुड़जी से कही थी। रामचरित मानस में काकभुशुण्डी ने अपने जन्म की पूर्वकथा और कलि महिमा का वर्णन किया है। इसका उल्लेख रामचरित मानस में मिलता है। **शेष पृष्ठ 6 पर**

महर्षि सांदीपनि आश्रम में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा सीखी गई 64 कलाओं की आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता

श्रीमती श्वेता पाठक
अतिथि व्याख्याता 1. गर्वनमेंट नर्सिंग, कॉलेज, (उज्जैन) 2. श्री राज राजेन्द्र जयंतसेन सुरी शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन

'ज्ञान के आलोक में कलाओं के लोक में आओ करें देश उत्थान, आओ करें विश्व कल्याण ' विश्व सभ्यता के अनन्य केन्द्र रूप में उज्जैयिनी का नाम सुविख्यात है । शस्त्र और विद्या की विलक्षण रंग–स्थली रही है यह नगरी अपने समूचे अर्थ में यह पुरातन नगरी भारत की समन्वयी संस्कृति धाराओं के मिलन, उनके समरस होने और नययुग के साथ हम कदम होने के साक्ष्य मिलता है, ऐसी विलक्षण नगरी में सांदिपनी आश्रम जहाँ पर भगवान श्रीकृष्ण बलराम एवं सुदामा जी ने शिक्षा ग्रहण की थी महर्षि सादीपनि ऋषि एक महान तपस्वी 16 कलाओं में पारंगत विद्वान ब्राम्हण पुत्र थे । गुरू सांदिपनि मूल रूप से काशी के निवासी थे । लेकिन वह अपने मृत पुत्रों के वियोग में काशी छोड़कर उज्जैन (अवंतिकापूरी) में पधारे थे। वे जब आये तो यहाँ सिंहस्थ (कुंभ) का मेला लगा हुआ था। इस उज्जैन नगरी अर्थात् अवंतिकापूरी की धरती पर अकाल (सूखा) पड़ा हुआ था। तब महर्षि सांदीपनि ने कई वर्षों की तपस्या के पश्चात् भगवान शंकर व माता पार्वती के साथ प्रकट होने पर महर्षि ने उनसे इस भयंकर महामारी से मुक्ति का आर्शिवाद माँगा इससे प्रसन्न होकर भगवान महादेव ने एक वर माँगने को कहा। गुरू सांदीपनि ने महादेव से अपने सातो मृत पुत्रों में से किसी एक को जीवित करने का वर माँगा। तब शंकर भगवान ने उन्हें कहा कि यहाँ पर आप अपना आश्रम बनाइये और हमेशा के लिये यहीं पर बस जाइये । द्वापद युग के प्रारंभ में जो दो छात्र आपके पास अध्ययन के लिये आयेगें वो ही आपके पुत्र को गुरु दक्षिणा के रूप में जीवित भेट देकर जायेगें । भगवान शंकर से प्राप्त वरदान और आज्ञा से गुरू सांदिपनी व्यासजी ने चंदन वन में ही अपने आश्रम की स्थापना की। यहाँ पर उस समय अनुमानतः पाँच हजार

विद्यार्थी गुरू सांदिपनी से विद्या अर्जन करते थे। युगांधर के मुताबिक आचार्य सांदिपनी की पर्ण कुटिया में सम्पूर्ण भारत कलिंग, अंग, बंग, मगध, कामरूप, अनंत, सौविर, पंचनद, काश्मीर, कुरू, जांगल पांचाल व वैदी आदि देशों से पधारे आश्रम कुमार (विद्यार्थी) रहते थे। पं. रूपम व्यासजी लेखक 'प्रथम गुरुकूल' ने स्वयं महर्षि सांदीपनि के इतिहास को विभिन्न पुराणों का अध्ययन करके संक्षिप्त जानकारी पुस्तक रूप में प्रस्तुत की है । ऐसा माना जाता है कि भगवान कृष्ण कंस का वध करने के बाद अपनी बुआ जो उज्जैन में रहती है के यहा विद्याध्ययन के लिये आये थे। उस समय उनकी आयु 11 वर्ष थी। इस पुस्तक में पं. रूपम व्यास बताते है कि बालक कृष्ण अत्यधिक चंचल थे, और विश्व में कहीं भी उनकी बैठी हुई प्रतिमा मिलना दुर्लभ हैं। किन्तु यहाँ बालक कृष्ण सुदामा व बलराम की गुरू सांदिपनी के सम्मुख बैठे है। व शिक्षा ग्रहण कर रहे है अन्यथा वो इतने चंचल थे कि वो हमेशा पेड़ पर बांसुरी बजाते हुये, छेड़ते हुये, माखन चोरी करते हुये दिखाई देते हैं साथ ही उज्जैन स्थित सांदिपनी आश्रम से 31 कि.मी. दूर नारायणा ग्राम है। किवंदती के अनुसार व पं. सदानंद जी के अनुसार विद्यार्जन के प्रथम दिन जंगल से लकड़ीयाँ लाने का कार्य सौंपा नारायणा ग्राम वह स्थान भी है जहाँ भगवान श्रीकृष्ण को उनके गुरू सांदिपनी से नारायण की उपाधि प्राप्त हुई सुदामा व कृष्ण का पहले ही दिन विद्याध्ययन करते हुये जंगल में लकड़ीयाँ लेने आये थे। ठीक उसी प्रकार आज के इंजीनियर (आई.आई.टी.) पोलिटेक्निक कॉलेज में भी विद्यार्थियों को लकड़ी का काम प्रारंभिक स्तर पर सिखाया जाता है। लकड़ीयों को बराबर आरी से काटना आदी । कृष्ण और सुदामा आज की ही भाँती उच्च वर्ग व निम्न वर्ग को प्रस्तुत करते है। कृष्ण क्षत्रिय थे व सुदामा बाम्हण और उनकी दो मित्रता गुरुकूल ही हुई। दोनों में जंगल में अलग–अलग पेड़ों पर रात बिताई स्वयं प्रातः गुरू सांदिपनी उनको खोजते हुये वहाँ पहुँचे और उनको लेकर गुरुकुल आये बालक कृष्ण ने गुरू के सांनिध्य में अपनी प्रखर बुद्धि से 4 वेद, पुराण, शास्त्र उपनिषद तथा 64 कलाओं को सिर्फ 64 दिनों में आत्मसात किया । व अपने जीवन में विभिन्न कलाओं कौशलों व शास्त्रों व विद्याओं का समुचित उपयोग भीविद्यार्थी गुरू सांदिपनी से विद्या अर्जन करते थे। युगांधर के मुताबिक आचार्य सांदिपनी की पर्ण कुटिया में सम्पूर्ण भारत कलिंग, अंग, बंग, मगध, कामरूप, अनंत, सौविर, पंचनद, काश्मीर, कुरू, जांगल पांचाल व वैदी आदि देशों से पधारे आश्रम कुमार (विद्यार्थी) रहते थे। पं. रूपम व्यासजी लेखक 'प्रथम गुरुकूल' ने स्वयं महर्षि सांदीपनि के इतिहास को विभिन्न पुराणों का अध्ययन करके संक्षिप्त जानकारी पुस्तक रूप में प्रस्तुत की है । ऐसा माना जाता है कि भगवान कृष्ण कंस का वध करने के बाद अपनी बुआ जो उज्जैन में रहती है के यहा विद्याध्ययन के लिये आये थे। उस समय उनकी आयु 11 वर्ष थी। इस पुस्तक में पं. रूपम व्यास बताते है कि बालक कृष्ण अत्यधिक चंचल थे, और विश्व में कहीं भी उनकी बैठी हुई प्रतिमा मिलना दुर्लभ हैं। किन्तु यहाँ बालक कृष्ण सुदामा व बलराम की गुरू सांदिपनी के सम्मुख बैठे है। व शिक्षा ग्रहण कर रहे है अन्यथा वो इतने चंचल थे कि वो हमेशा पेड़ पर बांसुरी बजाते हुये, छेड़ते हुये, माखन चोरी करते हुये दिखाई देते हैं साथ ही उज्जैन स्थित सांदिपनी आश्रम से 31 कि.मी. दूर नारायणा ग्राम है। किवंदती के अनुसार व पं. सदानंद जी के अनुसार विद्यार्जन के प्रथम दिन जंगल से लकड़ीयाँ लाने का कार्य सौंपा नारायणा ग्राम वह स्थान भी है जहाँ भगवान श्रीकृष्ण को उनके गुरू सांदिपनी से नारायण की उपाधि प्राप्त हुई सुदामा व कृष्ण का पहले ही दिन विद्याध्ययन करते हुये जंगल में लकड़ीयाँ लेने आये थे। ठीक उसी प्रकार आज के इंजीनियर (आई.आई.टी.) पोलिटेक्निक कॉलेज में भी विद्यार्थियों को लकड़ी का काम प्रारंभिक स्तर पर सिखाया जाता है। लकड़ीयों को बराबर आरी से काटना आदी । कृष्ण और सुदामा आज की ही भाँती उच्च वर्ग व निम्न वर्ग को प्रस्तुत करते है। कृष्ण क्षत्रिय थे व सुदामा बाम्हण और उनकी दो मित्रता गुरुकूल ही हुई। दोनों में जंगल में अलग–अलग पेड़ों पर रात बिताई स्वयं प्रातः गुरू सांदिपनी उनको खोजते हुये वहाँ पहुँचे और उनको लेकर गुरुकुल आये बालक कृष्ण ने गुरू के सांनिध्य में अपनी प्रखर बुद्धि से 4 वेद, पुराण, शास्त्र उपनिषद तथा 64 कलाओं को सिर्फ 64 दिनों में आत्मसात किया । व अपने जीवन में विभिन्न कलाओं कौशलों व शास्त्रों व विद्याओं का समुचित उपयोग भी किया। इस प्रकार महर्षि सांदष्पनि आश्रम में पढ़ाई जाने वाली शिक्षा – 4 वेद, 18 पुराण, विभिन्न शास्त्र उपनिषद तथा 64 कलाओं का हमारी शिक्षा व्यवस्था में समावेश व उसकी सारगर्भिता निर्विवाद है क्योंकि इसके माध्यम से विद्यार्थी न केवल – स्वावलंबी होंगे बल्कि आत्म निर्भर व आत्म विश्वासी बनेगें व राष्ट्र विकास में भी सहायक हो सकेंगें । व विभिन्न कौशलों व कला के माध्यम से शारीरिक, मानसिक व अध्यात्मिक विकास भी कर सकेंगें । प्राचीन भारत में शिक्षा में कलाओं को भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। शुक्राचार्य की पुस्तक (नीतिसार) के अनुसार कलाएँ अनन्त है, उन सबके नाम भी नहीं गिनाये – जा सकते, परन्तु 64 कलाएँ मुख्य है । कला का लक्षण बतलाते हुये आचार्य लिखते हैं कि जिसे एक मूक (गैंगा) व्यक्ति भी (जो वर्णोच्चारण नहीं कर सकता) कर सके, वह कला है, क्रियाओं के पार्थक्य से ही कलाओं में भेद होता है, जो व्यक्ति जिस दिन जिस कला का अवलंबन करता है, उसकी जाति उसी कला के नाम से जानी जाती है। भारतीय विचारधारा – टैगोर के अनुसार जो सत्य है वो सुंदर है, वही कला है । 'मनुष्य कला के माध्यम से अपने गम्भीरतम अंतर की अभिव्यक्ति करता है ।' प्रसाद जी के अनुसार 'ईश्वर की कृतज्ञ भक्ति का मानवद्वारा शारीरिक तथा मानसिक कौशलपूर्ण निर्माण, कला है ।' महात्मा गाँधी एक अनुभूति को दूसरे तक पहुँचाना ही कला है ।' माध्वी पारेख 'कला आंतरिक उर्जा है, ईमानदारी से देखे तो कला पूर्णतः नीजि और – अंतरमन की अभिव्यक्ति होती है ।' अर्पणा कौर के अनुसार जीवन अनुभव एवं जीवन दर्शन का निचोड़ कला है ।' उसमे कला है, एक दर्शन है, सबसे बड़ी बात है कि उसमें रहस्य है। रहस्य के तत्व है, कला में बोलना थोड़ा ही तो थोडा चुप भी रहना है। यानी एक स्पेस भी चाहिये । साथ–साथ रंगों का ड्रामा है। अंतः अर्तमन के अनुभवों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम कला है इस प्रकार कला शारिरिक संयोग व मानसिक कल्पनाओं की ऐसी मौलिक प्रस्तुति है जो देखने वाले सुनने वाले व जानकार लोगों को वाह वाह करवाती है आश्चर्य चकित करती है, अपनी कला का लोहा मानने के लिये मजबुर करती है । कला जो नहीं है उसका आभास करा सकती है। कला की प्रेरणा अंतरतम से – या अलौकिक अनदेखा, अनजाना, अनछुआ कोई पहलू उजागर होता है । यह मनोरंजन करती है । कला सृजनात्मकता का चरमोत्कर्ष है। जहाँ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का महत्वपूर्ण स्थान है। कोई भी कला – कौशल को यदि विद्यार्थी हृदयंगम करले तो वह न केवल आजिविका के लिये पराश्रीत नहीं रहता, अपितु अन्य क्षेत्रों व केवल उसी के माध्यम से उसके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास हो जाता है। इसलिये कह सकते है कि प्रत्येक मूख्य कला अपने आपमें परिपूर्ण है। जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व वैशीकरण है श्रीकृष्ण की बाँसुरी कला में सम्मोहन है सभी आम व खास के लिये प्रेरणा का स्त्रोत है। उनके द्वारा सीखी जाने वाली 64 कलाओं की जानकारी निम्नलिखित है गीत कला – वाद्यकला – अनेक वाद्यों का निर्माण करने व उनको बजाने का काम वीणा, डमरू, बांसुरी । नृत्यकला – हावभाव आदि के साथ गति को नृत्य कहा जाता है । नाट्यकला । आलेख – चित्र रचनादि । विशेष कच्छेद (नाना प्रकार के तिलक रचना) तण्डुल कुसुमावलि विकार (चाबल, कुसुम आदि पुजापहारों की विशेष रचना) पुष्पास्ताण (पुष्पादी द्वारा शय्या रचना) दशन वसनांगराग (दांतों, वस्त्र एवं अंगों का रंगना) मणिभुमिका कर्म (भूमि को मणिबद्ध करना) शयन रचन (पर्यगादि निर्माण) उदकवाद्य (जलतरंग, बजाना) उद्धात् (जल को रोकने की विद्या) चिनयोग (नाना प्रकार के अदभूत प्रदर्शन और उपाय करना) माल्यग्रंथ विकल्प (नानाविध माल रचना)नेपध्ययोग (नाना प्रकार की वेशभुषा और उनकी रचना) शेखरपिड योग (केशों को सजाना और उनमें पुष्प ग्रंथ करना)

कर्णपत भंग (कर्णभुषण रचना) गंधयुक्ति (चंदन, कस्तुरी आदि से रचित सुगन्धित द्वव्य प्रस्तुत करना)

भुषण योजन (भुषण अंलकार बनाना और सजाना)

इन्द्रजाल (जादूगरी)

कौयुमार योग (बहुरूप धारण विद्या एवं कुरूप को रूपवाना बनाना) हस्तलाघव (हाथों के संचालन द्वारा वस्तुओं का परिवर्तन कर देना) चित्रशाकापूप भक्ष्य विकार किया (नाना प्रकार के शाक, पकवान, खाद्य और व्यजन पावन रस रागासन योजना (पेय पदार्थो या रसो का नानाविध रंगना व उनमें से

(रचना)

मधुरत्व भोजन करना)

सूचीपाप कर्म (सिलाई व कढ़ाई रचना) वीणा डमरू वाद्यों आदि को बजाने की कला प्रहेलिका (गुप्त वाक्यों का अर्थ जानने की कला) सब प्रतिमाला (सब वस्तुओं की प्रतिमा बनालेने की कला) दुर्वयो योग (जो बोलने या करने में दुसाध्य हो, उसे बोलना व करना) पुस्तक वाचन (ग्रंथ का पाठ करना)

नाटिका ख्यामिक दर्शन (नाटिका आदि शास्त्रों का परिज्ञान व उनका निर्माण करना) काव्य समस्या पूरण (काव्य के गुप्त या नकहे हुये पद तथा समस्या के अंश की पूर्ति करना)

पटिका वेत्र बाण विकल्प (पटसन, वेज और गणादि के द्वारा पदार्थों का निर्माण करना जैसे बाण से खाट बुनना बेत से कुर्सी बनाना। पटसन से बोरी आदि का निर्माण करना)

तुर्ककर्म (सूत कातना या बटना, तकली या चर्खा चलाना)

तक्षण (लोहे का काम)

वास्तुविद्या (किस स्थान पर कैसा घर बनाया जाय)

रूप्स रत्न परीक्षा (सोना–चाँदी परीक्षण का ज्ञान)

धातुवाद (स्वर्ण बनाना किमियागरी) मणिराग (मणि व हीरों को रंगना) आकार ज्ञान (पत्थर कोयला, मणी आदि धातुओं की खानों का ज्ञान) वृक्षायुर्वेद योग (वृक्षादि की चिकित्सा का ज्ञान)

भेष, कुक्कुर, शावक युद्ध विधि (भेष मुर्गी बटेर आदि को लड़ाने की प्रणली का ज्ञान) शुकसारिका प्रलापन (तोता–मैना को पढ़ाना और बोली सिखाना) उत्सापन (मालिश, उबटन करना)

केशमाजैन कौशल (बालकाटना, वेणी गॅथना) अक्षर, मुष्टिका कघन (अदृश्य अक्षर का स्परूप एवं मुट्ठ में छिपी हुई वस्तु का ज्ञान)

मलेच्छितक विकल्प (उर्दू आदि विविध मलेच्छ भाषाओं का ज्ञान)

देश, भाषा, ज्ञान (विविध देशों की भाषाओं का ज्ञान) पुष्प शकटिका निमित्त ज्ञान (आकाशवाणी निमित्त ज्ञान अर्थात् वायु वर्षा आदि होने का भविष्य ज्ञान) यन्त्रमातृका (पूजा निमित्त यंत्र निर्माण करना एवं धारण मातृका यंत्रों को धारण करने का ज्ञान)

सम्पाट्य (हीरा काटने का ज्ञान) मानसी काव्य क्रिया (दुसरे के मन की बात जानकर उसको कविता में प्रकट करना) किया विकल्प (एक ही कार्य को विविध उपायों से सम्पादन करने की कुशलता का ज्ञान) छलितकयोग (छलने की क्रिया) अभिधान कोष (शब्द कोष का ज्ञान) छन्दोज्ञान (विविध शब्दों का ज्ञान) वस्त्रगोपनानि (सूती वस्त्र को रेशमी कपड़े की भाँति प्रदर्शित करना) द्युत विशेष (पासा खेलने की विद्या) आकर्ष क्रिडा (आकर्षण विद्याके बल से पदार्थों को आकर्षित करना) बाल किडक (खिलौने तैयार करना) वैज्ञाधिकी (शास्त्र विद्या ज्ञान) वैजयियकी (शस्त्र विद्या ज्ञान) बैतालिकी (भूतप्रेत सिद्ध करने की कला) ये सभी 64 कलाये व्यक्ति के व्यक्तित्व के अलग– पक्षों से संबंधित है तथा वर्तमान् शिक्षा में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा सीखी गई कलाओं की सारगर्भितता व महत्व इसलिये बढ़ गया है क्योंकि आज की शिक्षा व्यवस्था स्नातक व स्नानकोत्तर शिक्षा के बाद भी विद्यार्थियों को जिविकोपार्जन में सक्षम नहीं बना पाती फलवरूप वे बढ़े–लिखे बेरोजव परजीवी बन जाते है। प्रतिस्पर्धा के युग में तनाव होना सरल ही है किन्तु कला से जुड़ने पर एक जिविका का क्षेत्र तो मिलता ही है अपितु तनाव व प्रतिस्पर्धा खस टिप्स (सरकारी नौकरियों में, आई.टी. सेक्टर में कुछ कम हो सकती है। क्योंकि हमें स्वयं रोजगार ढुढने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, नई शिक्षा निमि 2020 के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रोजगारोन्मुख कला–कौशल प्रशिक्षण पर प्राथमिक व माध्यमिक स्तर से ही प्रदान करने पर जोर दिया है ताकि युवा जोकि विश्व में सबसे अधिक भारत में है। 60 प्रतिशत 15 से 45 वर्ष के युवा आबादी अपने स्वर्णीम वर्षों में स्वयं के लिये व समाज व राष्ट्र के उत्थान में विश्व अग्रणी होने में अपना अधिकतम योगदान कर सके प्राथमिक स्तर पर विभाषा फार्मुला व पूर्वमाध्यमिक स्तरपर 6–8 में भाषा (विदेशी) व कोडिका का ज्ञान समाहित करना ये दर्शाता है कि ये वर्तमान की आवश्यकता भी है और प्राकृतिक समन्वय भी आधुनिकता में प्राचिन कलाओं का संरक्षण, संवर्धन उद्देश्योन्मुलक वैचारिक सोच व वैज्ञानिक पादर्शिता भी समाहित है जो कि इन 64 कला कौशलों में दिखाई पड़ती हैं।

राहु को क्यों कहते हैं पापी ग्रह? कैसे करता है राशि परिवर्तन

ज्योतिष शास्त्र सभी 9 ग्रहों की चाल, 12 राशियों के गुण और 27 नक्षत्रों की गणना के आधार पर ही किसी घटना के बारे में भविष्यवाणी करता है। ग्रहों, राशियों और नक्षत्रों की अपनी–अपनी भूमिका होती है। सभी का गहन रूप से विश्लेषण कर किसी नतीजे पर पहुंचा जाता है। ज्योतिष गणना में ग्रहों की विशेष भूमिका होती है। सभी 9 ग्रहों में कुछ ग्रह शुभ तो कुछ अशुभ परिणाम देते हैं।

ज्योतिषाचार्य अनीष व्यास ने बताया कि आम धारणा के अनुसार, कुछ ऐसे ग्रह हैं जिनका नाम आते ही लोग डरकर कांपने लगते हैं। उन्हें लगता है कि अगर ये ग्रह कुंडली के अशुभ घर में आकर बैठ गए तो जीवन में भारी मुसीबते आनी आरंभ हो जाएंगी। इन ग्रहों में राहु, केतु, शनि और मंगल का नाम आता हैं। ज्योतिष शास्त्र में इन्हें पापी और अशुभ फल देने वाला ग्रह माना गया है। हालांकि ये ग्रह हमेशा अशुभ फल ही देते हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता। कभी–कभी ये पापी और अशुभ ग्रह कुंडली में ऐसे भाव में आकर बैठ जाते हैं, जहां से जातक के जीवन में वैभव और तमाम तरह की खुशियां मिलने लगती हैं। जातक रंक से राजा बन जाता है।

राहु ग्रह– आज हम आपको राहु ग्रह के बारे में बताने जा रहे हैं। दरअसल राहु 18 महीनों के बाद 23 सितंबर 2020 को राशि परिवर्तन करने जा रहा है। राहु के राशि परिवर्तन से सभी जातकों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ने वाला है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, राहु एक ऐसा ग्रह है जो अचानक फल देता है। यह फल शुभ भी हो सकता है और अशुभ भी। इसी कारण से राहु का नाम सुनते ही लोग परेशान हो उठते हैं। राहु की चाल से कुंडली में शुभ और अशुभ दोनों तरह के योग बनते हैं। राहु की वजह से लोगों की बुद्धि भ्रमित हो जाती है, लेकिन कुछ ऐसी स्थितियां भी बनती हैं जब राहु न सिर्फ सताता है बल्कि राजपाट भी दिलाता देता है। राहु की वजह से व्यक्ति सभी तरह का सुख और वैभव को प्राप्त करने लगता है। राहु की जब–जब भी किसी अन्य ग्रह के साथ मिलकर युति बनती है तब शुभ और अशुभ दोनों तरह का योग बनता है।

राहु ग्रह का महत्व– ज्योतिष में राहु ग्रह को एक पापी ग्रह माना जाता है। वैदिक ज्योतिष में राहु ग्रह को कठोर वाणी, जुआ, यात्राएं, चोरी, दुष्ट कर्म, त्वचा के रोग, धार्मिक यात्राएं आदि का कारक कहते हैं। जिस व्यक्ति की जन्म पत्रिका में राहु अशुभ स्थान पर बैठा हो अथवा पीड़ित हो, तो यह जातक को इसके नकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं। ज्योतिष में राहु ग्रह को किसी भी राशि का स्वामित्व प्राप्त नहीं है, लेकिन मिथुन राशि में यह उच्च होता है और धनु राशि में यह नीच भाव में होता है।

क्या आप भी करते है मंत्र जाप करने में गलती, जानें क्या है सही तरीका

भगवान की पूजा करते समय हम सभी धूप–आरती तो करते ही हैं साथ ही मंत्रों का जाप भी करते हैं। जिस तरह हम भगवान के दर्शन करते समय अपना सिर उनके सामने झुकाते हैं ठीक उसी तरह हमें मंत्रों का जाप करते समय भी कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए। अगर मंत्रों का जाप करते समय भगवान के समक्ष बैठकर हम विधिपूर्वक जाप नहीं करते हैं तो उससे मंत्रों का प्रभाव कम हो जाता है।

– सबसे पहले आपको जमीन पर शुद्ध ऊनी आसन बिछाना होगा।

– फिर पद्मासन या सुखासन कर बैठें। कमर को न झुकाएं और चेहरे को सीधा रखें।

– माला को इस्तेमाल करने से पहले उसे शुद्ध जल से धोएं और तिलक जरूर लगाएं।

– जाप करने के लिए एक निश्चित संख्या होनी आवश्यक है।

– माला का जाप करते समय आपको अपना मुख पूर्व दिशा की तरफ रखना चाहिए।

– माल को दाएं हाथ में रखना होगा। उंगलियों को अंगूठे के पोर से फेरना शुरू करें।

– माला पर नाखून से स्पर्श न करें।

– प्लास्टिक की माला का इस्तेमाल न करें।

– जब आप माला फेरे और मंत्रों का जाप करें तो इधर–उधर न देखें।

– माला को पकड़ते समय उसे नाभि से नीचे न रखें और माला नाक के ऊपर नहीं जानी चाहिए।

– माला को सीने से 4 अंगुल दूर रखें।

– जब आप जाप कर रहे हों तो आंखें भगवान के सामने रखें। आप आंखें मूंद भी सकते हैं।

– जाप करते समय माला के ऊपर जो भाग होता है उसे क्रॉस नहीं किया जाना चाहिए। जैले बी आप सुमेरु तक पहुंचे तो तुरंत वापस आ जाएं।

– ध्यान रहे कि जाप करते समय माला नीचे न गिरे। जाप खत्म होने के बाद माला को आसन पर या डिब्बी में रखें।

– बिना संकल्प किए मंत्र का जाप करने से किसी को कोई फल नहीं मिलता है।

ऊर्जा

इंजी. पं. हर्ष शुक्ला बी.ई. (सिविल), पी.जी.डी. (मानवाधिकार) सामाजिक कार्यकर्ता एवं सलाहाकार

सपने थे रंगीन आंख में, दिल में दुनियादारी थी । एक साधु ने छोड़ हिमालय, अपनी टांग पसारी थी । राम हमारे जननायक है, कर्म–धर्म बन जाने से । रावण जग का खलनायक है, हर क्रिया व्यभिचारी थी । कैसी आफत आयी थी, सबकी जान पर भारी थी । चीन छोड़कर दुनिया भर में फैली जो महामारी थी ।

हाथ जोड़कर बोला सबसे, काम बंद और सड़कें बंद । अच्छे दिन के वादे वाले, यह तेरी तैयारी थी ।। झुके नहीं पर उन्हें झुकाया, हमें नाज है अन्नदाता । बीच बजरिया, जनसेवक की, जमकर लू उतारी थी । आजादी की चाह जागी थी, उन पथरीली राहों से । गांधी के नंगे पैरों ने, जिन पर उम्र गुजारी थी ।

गौरों से लड़कर बापू ने, हम सब को आजाद किया । लाल–जवाहर ने भारत की, तब तकदीर सवारी थी । बहुत सुनी है मन की बातें, हर्ष सुनाओ जन की बात । दीवाली के शुभ अवसर पर, जनता यही पुकारी थी । रूप बदलकर एक बहरूपिया, बन बैठा है जनसेवक । त्याग, तपस्या, बलिदानों पर, उसने लातें मारी थी ।

प्रचंड शक्ति बनकर उभरेगा भारत, जानें प्रो. हरार की प्रसिद्ध भविष्यवाणियां

इसराइल के भविष्यवक्ता प्रोफेसर हरार एक बहुत ही प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इनका जन्म इसराइल के एक यहूदी परिवार में हुआ था। कहा जाता है कि इनकी भविष्यवाणी कभी गलत नहीं होती थी। ये हमेशा अचूक भविष्यवाणी करते थे। प्रो. हरार ने अपनी एक भविष्यवाणी में कहा था कि अरब के प्रधान शाह मुहम्मद की 3–3 यात्राओं की तैयरियां पूरी हो जाने के बाद भी वे यात्रा नहीं कर पाएंगे। आगे चलकर यही हुआ जो प्रो. हरार ने कहा था। पहली बार यात्रा की तैयारी पूरी होने के बाद वो घोड़े से गिर पड़े। इससे शाह के पैर में फैक्चर हो गया। दूसरी बार यात्रा की तैयारी पूरी होने के बाद मौसम की खराबी के कारण विमान नहीं उड़ पाया। तीसरी बार यात्रा की तैयारी पूरी होने के बाद पड़ोसी देश द्वारा हमला कर देने के चलते उनकी यात्रा स्थगित हो गईं।

प्रो. हरार ने भारत को लेकर भी भविष्यवाणी की थी। उन्होंने भारत–पाक युद्ध की तारीख को करीब 2 साल पहले ही बता दिया था। यही नहीं, उन्होंने बांग्लादेश के उदय की भविष्यवाणी भी पहले ही कर दी थी।

पृष्ठ 4 सें जारी

सनातन धर्म के यह विश्व प्रसिद्ध बारह संवाद, !!!

नारदजी की आज्ञा से जब भगवान राम को नागपाश से छुड़ाकर गरुड़जी पुनः अपने धाम लौट रहे होते हैं तब उनके मन में शंका उत्पन्न होती है कि यह कैसे भगवान जो एक तुच्छ राक्षस द्वारा फेंके गए नागपाश से ही बंध गए? इस शंका समाधान के लिए वे नारद से पूछते हैं। नारदजी उन्हें ब्रह्मा के पास भेज देते हैं। ब्रह्माजी उन्हें शिवजी के पास भेज देते हैं। तब शिवजी ने कहा भगवान की माया बताना मुश्किल है। एक पक्षी ही एक पक्षी को समझा सकता है अतः तुम काक भिशुण्डी के पास जाओ। काक भुशुण्डी और गरुड़जी के बीच जो संवाद होता है वह अतुलनीय है।

दसवां संवाद, युधिष्ठिर–भीष्म संवाद !!!!!!!!!

अंतिम वक्त में पितामह भीष्म ने युधिष्ठिर को समझाया धर्म का मर्म। क्या कहा भीष्म ने युधिष्ठिर से जब वे तीरों की शैया पर लेटे हुए थे?

भीष्म यद्यपि शरशय्या पर पड़े हुए थे फिर भी उन्होंने श्रीकृष्ण के कहने से युद्ध के बाद युधिष्ठिर का शोक दूर करने के लिए राजधर्म, मोक्षधर्म और आपद्धर्म आदि का मूल्यवान उपदेश बड़े विस्तार के साथ दिया। इस उपदेश को सुनने से युधिष्ठिर के मन से ग्लानि और पश्चादताप दूर हो जाता है। यह उपदेश महाभारत के भीष्मस्वर्गारोहण पर्व में मिलता है।

ग्यारहवां संवाद,धृतराष्ट्र–विदुर संवाद !!!!!!!

महाभारत' की कथा के महत्वपूर्ण पात्र विदुर को कौरव–वंश की गाथा में विशेष स्थान प्राप्त है। विदुर हस्तिनापुर राज्ये के शीर्ष स्तं भों में से एक अत्यंपत नीतिपूर्ण, न्यायोचित सलाह देने वाले माने गए है।

हिन्दू ग्रंथों में दिए जीवन–जगत के व्यवहार में राजा और प्रजा के दायित्वों की विधिवत नीति की व्याख्या करने वाले महापुरुषों में महात्मा विदुर सुविख्यात हैं। उनकी विदुर–नीति वास्तव में महाभारत युद्ध से पूर्व युद्ध के परिणाम के प्रति शंकित हस्तिनापुर के महाराज धृतराष्ट्र के साथ उनका संवाद है।

वास्तव में महर्षि वेदव्यास रचित 'महाभारत' का उद्योग पर्व 'विदुर नीति' के रूप में वर्णित है। महाभारत में एक और जहां महत्वपूर्ण कृष्ण अर्जुन संवाद, यक्ष युधिष्ठिार संवाद, धृतराष्ट्र संजय संवाद, भीष्म युद्धिष्ठिर संवाद है तो दूसरी और धृतराष्ट और विदूर का महत्वपूर्ण संवाद भी वर्णित है। प्रत्येक हिन्दू को महाभारत पढ़ना चाहिए। इस घर में भी रखना चाहिए। जो यह कहता है कि महाभारत घर में रखने से महाभारत होती है वह मूर्ख, अज्ञानी या धूर्त व्यक्ति हिन्दुओं को अपने धर्म से दूर रखना चाहता होगा।

बारहवां संवाद,आदि शंकराचार्य–मंडन मिश्र संवाद!!!!!!!!!!

आदि शंकराचार्य देशभर के साधु–संतों और विद्वानों से शास्त्रार्थ करते करते अंत में प्रसिद्ध विद्वान मंडन मिश्र के गांव पहुंचे थे। यहां उन्होंने 42 दिनों तक लगातार हुए शास्त्रार्थ किया जिसकी निर्णायक थीं मंडन मिश्र की पत्नी भारती।

आदि शंकराचार्य और मंडन मिश्र के बीच जो संवाद हुआ उस संवाद की बहुत चर्चा होती है। हालांकि आदि शंकराचार्य ने मंडन को पराजित कर तो दिया, पर उनकी पत्नी के एक सवाल का जवाब के लिए समय की मांग की और अपने परकाया ज्ञान और ––शेष अगले अंक में

उज्जैन में भगवान महाकाल मंदिर से जुड़ी अहम खबर, अगले 15 महीने में होगा ये जरूरी काम

उज्जैन। शिव भक्तों के लिए अच्छी खबर है. उज्जैन में भगवान महाकाल मंदिर परिसर को महाकाल वन प्रोजेक्ट के तहत नया बदलाव और विस्तारीकरण योजना के जरिए विकसित किया जा रहा है।

उज्जैन में भगवान महाकाल का मंदिर परिसर आने वाले 15 माह के दौरान बिल्कुल बदल जाएगा. मंदिर परिसर को महाकाल वन प्रोजेक्ट के तहत नया बदलाव और विस्तारीकरण योजना के जरिए विकसित किया जा रहा है. शिव भक्तों के लिए अच्छी खबर है कि भगवान महाकाल का दरबार प्राचीन स्वरूप के साथ-साथ श्रद्धालुओं की नई सुविधा के लिए विस्तारित हो रहा है. महाकाल वन प्रोजेक्ट और विस्तारीकरण योजना पर मध्यप्रदेश सरकार 752 करोड़ रुपए खर्च कर रही है. योजना के मार्च 2023 तक पूरी होने की उम्मीद है लेकिन विस्तारीकरण योजना का आधा भाग फरवरी 2022 तक मुकम्मल हो जाएगा।

20 हेक्टेयर में फैल जाएगा मंदिर

विस्तारीकरण योजना के एक भाग का काम अंतिम दौर में चल रहा है. महाकाल मंदिर विस्तारीकरण योजना पूरी होने के बाद परिसर में लगभग 1 लाख श्रद्धालुओं की क्षमता हो सकेगी. वर्तमान समय में महाकाल मंदिर का परिसर दो से ढाई हेक्टेयर में फैला हुआ है, जबकि विस्तारीकरण के बाद 20 हेक्टेयर में फैल जाएगा. महाकालेश्वर मंदिर समिति के अध्यक्ष और कलेक्टर आशीष सिंह ने बताया कि महाकाल मंदिर का नया स्वरूप सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किया जा रहा है।

प्राचीन स्वरूप को ध्यान में रखते हुए विस्तारीकरण

प्रतिदिन आने वाले स्थानीय श्रद्धालुओं के लिए मंदिर के नजदीक से प्रवेश की व्यवस्था रहेगी, जबकि बाहरी भक्तों के लिए अलग से विजिटर सेंटर बनाए जा रहे हैं।

जहां उन्हें पूरे परिसर में घूमकर अद्भुत आनंद की अनुभूति होगी. प्राचीन समय में महाकाल मंदिर क्षेत्र को महाकाल वन क्षेत्र कहा जाता था. योजना में प्राचीन स्वरूप को ध्यान में रखते हुए विस्तारीकरण किया जा रहा है. यहां पर सप्त ऋषि के साथ-साथ भगवान शिव के कई रूपों का दर्शन होगा. इसके अलावा नवग्रह भी विराजमान रहेंगे।

अमावस्या और पूर्णिमा का रहस्य

हिन्दू धर्म में पूर्णिमा, अमावस्या और ग्रहण के रहस्य को उजागर किया गया है। इसके अलावा वर्ष में ऐसे कई महत्वपूर्ण दिन और रात हैं,जिनका धरती और मानव मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। उनमें से ही माह में पड़ने वाले 2 दिन सबसे महत्वपूर्ण हैं 9 पूर्णिमा और अमावस्या। पूर्णिमा और अमावस्या के प्रति बहुत से लोगों में डर है। खासकर अमावस्या के प्रति ज्यादा डर है। वर्ष में 12 पूर्णिमा और 12 अमावस्या होती हैं। सभी का अलग–अलग महत्व है।

माह के 30 दिन को चन्द्र कला के आधार पर 15–15 दिन के 2 पक्षों में बांटा गया है 9 *%शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष%*। शुक्ल पक्ष के अंतिम दिन को पूर्णिमा कहते हैं और कृष्ण पक्ष के अंतिम दिन को अमावस्या।

यदि शुरुआत से गिनें तो 30 तिथियों के नाम निम्न हैं9पूर्णिमा(पुरणमासी), प्रतिपदा (पड़वा), द्वितीया (दूज), तृतीया (तीज), चतुर्थी (चौथ), पंचमी (पंचमी), षष्ठी (छठ), सप्तमी (सातम), अष्टमी (आठम), नवमी (नौमी), दशमी (दसम), एकादशी (ग्यारस), द्वादशी (बारस), त्रयोदशी (तेरस), चतुर्दशी (चौदस) और अमावस्या (अमावस)।

अमावस्या पंचांग के अनुसार माह की 30वीं और कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि है, जिस दिन कि चंद्रमा आकाश में दिखाई नहीं देता। हर माह की पूर्णिमा और अमावस्या को कोई न कोई पर्व अवश्य मनाया जाता, ताकि इन दिनों व्यक्ति का ध्यान धर्म की ओर लगा रहे..!!

नकारात्मक और सकारात्मक शक्तियां :धरती के मान से 2 तरह की शक्तियां होती हैं– %सकारात्मक और नकारात्मक%, दिन और रात, अच्छा और बुरा आदि। हिन्दू धर्म के अनुसार धरती पर उक्त दोनों तरह की शक्तियों का वर्चस्व सदा से रहता आया है। हालांकि कुछ मिश्रित शक्तियां भी होती हैं, जैसे संध्या होती है तथा जो दिन और रात के बीच होती है। उसमें दिन के गुण भी होते हैं और रात के गुण भी।

इन प्राकृतिक और दैवीय शक्तियों के कारण ही धरती पर भांति–भांति के जीव–जंतु, पशु–पक्षी और पेड़–पौधों, निशाचरों आदि का जन्म और विकास हुआ है। इन शक्तियों के कारण ही मनुष्यों में देवगुण और दैत्य गुण होते हैं।

हिन्दुओं ने सूर्य और चन्द्र की गति और कला को जानकर वर्ष का निर्धारण किया गया। 1 वर्ष में सूर्य पर आधारित 2 अयन होते हैं– पहला उत्तरायण और दूसरा दक्षिणायन। इसी तरह चंद्र पर आधारित 1 माह के 2 पक्ष होते हैं 9 शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष। इनमें से वर्ष के मान से उत्तरायण में और माह के मान से शुक्ल पक्ष में देव आत्माएं सक्रिय रहती हैं, तो दक्षिणायन और कृष्ण पक्ष में दैत्य और पितर आत्माएं ज्यादा सक्रिय रहती हैं। अच्छे लोग किसी भी प्रकार का धार्मिक और मांगलिक कार्य रात में नहीं करते जबकि दूसरे लोग अपने सभी धार्मिक और मांगलिक कार्य सहित सभी सांसारिक कार्य रात में ही करते हैं। पूर्णिमा का विज्ञान :पूर्णिमा की रात मन ज्यादा बेचैन रहता है और नींद कम ही आती है। कमजोर दिमाग वाले लोगों के मन में आत्महत्या या हत्या करने के विचार बढ़ जाते हैं। चांद का धरती के जल से संबंध है। जब पूर्णिमा आती है तो समुद्र में ज्वार–भाटा उत्पन्न होता है, क्योंकि चंद्रमा समुद्र के जल को ऊपर की ओर खींचता है। मानव के शरीर में भी लगभग 85 प्रतिशत जल रहता है। पूर्णिमा के दिन इस जल की गति और गुण बदल जाते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार इस दिन चन्द्रमा का प्रभाव काफी तेज होता है इन कारणों से शरीर के अंदर रक्त में न्यूरॉन सेल्स क्रियाशील हो जाते हैं और ऐसी स्थिति में इंसान ज्यादा उत्तेजित या भावुक रहता है। एक बार नहीं, प्रत्येक पूर्णिमा को ऐसा होता रहता है तो व्यक्ति का भविष्य भी उसी अनुसार बनता और बिगड़ता रहता है। जिन्हें मंदाग्नि रोग होता है या जिनके पेट में चय–उपचय की क्रिया शिथिल होती है, तब अक्सर सुनने में आता है कि ऐसे व्यक्ति भोजन करने के बाद नशा जैसा महसूस करते हैं और नशे में न्यूरॉन सेल्स शिथिल हो जाते हैं जिससे दिमाग का नियंत्रण शरीर पर कम, भावनाओं पर ज्यादा केंद्रित हो जाता है। ऐसे व्यक्तियों पर चन्द्रमा का प्रभाव गलत दिशा लेने लगता है। इस कारण पूर्णिमा व्रत का पालन रखने की सलाह दी जाती है। कुछ मुख्य पूर्णिमा :कार्तिक पूर्णिमा, माघ पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा आदि। **चेतावनी** : इस दिन किसी भी प्रकार की तामसिक वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए। इस दिन शराब आदि नशे से भी दूर रहना चाहिए। इसके शरीर पर ही नहीं, आपके भविष्य पर भी दुष्परिणाम हो सकते हैं। जानकार लोग तो यह कहते हैं कि चौदस, पूर्णिमा और प्रतिपदा उक्त 3 दिन पवित्र बने रहने में ही भलाई है।

अमावस्या– वर्ष के मान से उत्तरायण में और माह के मान से शुक्ल पक्ष में देव आत्माएं सक्रिय रहती हैं तो दक्षिणायन और कृष्ण पक्ष में दैत्य आत्माएं ज्यादा सक्रिय रहती हैं। जब दानवी आत्माएं ज्यादा सक्रिय रहती हैं, तब मनुष्यों में भी दानवी प्रवृत्ति का असर बढ़ जाता है इसीलिए उक्त दिनों के महत्वपूर्ण दिन में व्यक्ति के मन–मस्तिष्क को धर्म की ओर मोड़ दिया जाता है।

अमावस्या के दिन भूत–प्रेत, पितृ, पिशाच, निशाचर जीव–जंतु और दैत्य ज्यादा सक्रिय और उन्मुक्त रहते हैं। ऐसे दिन की प्रकृति को जानकर विशेष सावधानी रखनी चाहिए। प्रेत के शरीर की रचना में 25 प्रतिशत फिजिकल एटम और 75 प्रतिशत ईथरिक एटम होता है। इसी प्रकार पितृ शरीर के निर्माण में 25 प्रतिशत ईथरिक एटम और 75 प्रतिशत एस्ट्रल एटम होता है। अगर ईथरिक एटम सघन हो जाए तो प्रेतों का छायाचित्र लिया जा सकता है और इसी प्रकार यदि एस्ट्रल एटम सघन हो जाए तो पितरों का भी छायाचित्र लिया जा सकता है। ज्योतिष में चन्द्र को मन का देवता माना गया है। अमावस्या के दिन चन्द्रमा दिखाई नहीं देता। ऐसे में जो लोग अति भावुक होते हैं, उन पर इस बात का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। लड़कियां मन से बहुत ही भावुक होती हैं। इस दिन चन्द्रमा नहीं दिखाई देता तो ऐसे में हमारे शरीर में हलचल अधिक बढ़ जाती है। जो व्यक्ति नकारात्मक सोच वाला होता है उसे नकारात्मक शक्ति अपने प्रभाव में ले लेती है। धर्मग्रंथों में चन्द्रमा की 16वीं कला को अमा कहा गया है। चन्द्रमंडल की अमा नाम की महाकला है जिसमें चन्द्रमा की 16 कलाओं की शक्ति शामिल है। शास्त्रों में अमा के अनेक नाम आए हैं, जैसे अमावस्या, सूर्य–चन्द्र संगम, पंचदशी, अमावसी, अमावासी या अमामासी। अमावस्या के दिन चन्द्र नहीं दिखाई देता अर्थात जिसका क्षय और उदय नहीं होता है उसे अमावस्या कहा गया है, तब इसे कुहू अमावस्या भी कहा जाता है। अमावस्या माह में एक बार ही आती है। शास्त्रों में अमावस्या तिथि का स्वामी पितृदेव को माना जाता है। अमावस्या सूर्य और चन्द्र के मिलन का काल है। इस दिन दोनों ही एक ही राशि में रहते हैं। कुछ मुख्य अमावस्या :भौमवती अमावस्या, मौनी अमावस्या, शनि अमावस्या, हरियाली अमावस्या, दिवाली अमावस्या, सोमवती अमावस्या, सर्वपितृ अमावस्या। चेतावनी :इस दिन किसी भी प्रकार की तामसिक वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए। इस दिन शराब आदि नशे से भी दूर रहना चाहिए। इसके शरीर पर ही नहीं, आपके भविष्य पर भी दुष्परिणाम हो सकते हैं। जानकार लोग तो यह कहते हैं कि चौदस, अमावस्या और प्रतिपदा उक्त 3 दिन पवित्र बने रहने में ही भलाई है..!*

समाचार पत्र / न्यूज चैनल / वेब पोर्टल हेतु प्रदेश / जिला / तहसील स्तर पर प्रतिनिधि/ संवाददाता नियुक्त करना है। मोबा. 9303968612, 9993233073

pun-ditrkjoshi@gmail.com /editor@dsansarnews.com

पृथम प्रष्ठ से जारी...

सनातम धर्म के चार स्तम्भ

संवत् 2048 तद्नुसार दिनांक 9 फरवरी 1992 को उन्हें अपने करकमलों से गोवर्धनमठ पुरी के 145 वें शंकराचार्य पद पर पदासीन किया 7 शंकराचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने के तुरन्त बाद आपने 'अन्यों के हित का ध्यान रखते हुए हिन्दुओं के अस्तित्व और आदर्श की रक्षा, देश की सुरक्षा और अखण्डता' के उद्देश्य से प्रामाणिक और समस्त आचार्यों को एक मंच पर लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए राष्ट रक्षा के इस अभियान को अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान कराने की दिशा में अपना प्रयास आरंभ कर दिए। राष्टरक्षा की अपनी राष्ट व्यापी योजना को मूर्तरूप दिलाने हेतु उन्होंने देश के प्रबुद्ध नागरिकों के लिए 'पीठ परिषद' और उसके अन्तर्गत युवकों की 'आदित्य वाहिनी' तथा मातृशक्ति के लिए आनन्द वाहिनी के नाम से एक संगठनात्मक परियोजना तैयार की। **पं. अखिलेश रामकृष्ण जोशी ह्न**

इसमें बालकों के लिए 'बाल आदित्य वाहिनी' एवं बालिकाओं हेतु बाल आनंद वाहिनी की व्यवस्था भी की गई 7 पूज्यपाद जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती जी महाराज ने चैत्र शुक्ल नवमी शनिवार विक्रम संवत् 2049 तद्नुसार दिनाकं 4 अप्रैल सन् 1992 को रामनवमी के शुभ दिन पर श्री गोवर्धनमठपुरी में 'पीठ परिषद' और उसके अंतर्गत 'आदित्य वाहिनी' का शुभारंभ करवाया। कलियुग में संघ के शक्ति सन्निहित हैं 7 धर्म, ईश्वर और राष्ट से जोड़ने का कार्य संघ द्वारा सम्पन्न हो, यह आवश्यक हैं।

पूज्यपाद जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी द्वारा स्थापित पीठ परिषद और उसके अंतर्गत आदित्य वाहिनी एवं आनन्द वाहिनी का मुख्य उद्देश्य 'अन्यों के हित का ध्यान रखते हुए हिन्दुओं के अस्तित्व और आदर्श की रक्षा, देश की सुरक्षा और अखण्डता' हैं पूज्यपाद महाराज श्री का अभियान मानव मात्र को सुबुद्ध, सत्य सहिष्णु और स्वावलम्बी बनाना है । उनका प्रयास है कि पार्टी और पन्थ में विभक्त राष्ट को सार्वभौम सनातन सिद्धान्तों के प्रति दार्शनिक, वैज्ञानिक और व्यवहारिक धरातल पर आस्थान्वित कराने का मार्ग प्रशस्त हो। उनका ध्येय है कि सत्तालोलुपता और अदूरदर्शिता के वशीभूत राजनेताओं की चपेट से देश को मुक्त कराया जाये। बड़े भाग्यशाली हैं वे लोग जिन्हें विश्व के सर्वोच्च ज्ञानी के रूप में प्रतिष्ठित इन महात्मा द्वारा चलाये जा रहे अभियान में सहभागी बनने और जिम्मेदारी निभाने का सुअवसर मिला हुआ है। परमपूज्य गुरूदेव के चरणों में कोटिशः नमन तथा चन्द्रमौलीश्वर भगवान से दीर्घायुष्य एवं आसेम्यता के लिए प्रार्थना है।

मालिक/प्रकाशक पं. अखिलेश रामकृष्ण जोशी द्वारा 66, योगीपुरा विक्रमादित्य मंदिर हरसिद्धि के पास, उज्जैन (म.प्र.) से प्रकाशित कर मुद्रक श्रीमति भगवती देवी शर्मा द्वारा 'भगवती आफसेट' 44, बहादुरगंज उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित। सम्पादक : श्रीमती गिरिजा रजनीश जोशी- मोबा. 9993233073

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र उज्जैन रहेगा।